बौद्ध दर्शन

बौद्ध धर्म का सामान्य परिचय

संस्थापक - महात्मा गौतम बुद्ध

बचपन का नाम - सिद्धार्थ

माता एवं पिता - महामाया, शुद्धोधन (कपिलवस्तु के राजा)

विमाता - महाप्रजापती गौतमी (पालन-पोषण किया था)।

जन्म स्थान एवं समय - 563 ई० पू०, लुम्बिनी (वर्तमान में नेपाल की तराई में)

पत्नि एवं पुत्र - यशोधरा, राहुल (पुत्र)

गृहत्याग का समय - 29 वर्ष की अवस्था में। इनके गृहत्याग को 'महाभिनिष्क्रमण' भी कहा जाता है।

विवाह वर्ष - 16 वर्ष की आयु में

गुरु - गृहत्याग के बाद ये दो गुरुओं से शिक्षा ग्रहण की।
(1) अलार कलाम
(2) उद्दकरामपुत्र

ज्ञान प्राप्ति - 6 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद वैशाख मास की पूर्णिमा (वैशाख पूर्णिमा) के दिन पीपल वृक्ष के नीचे हुआ।

ज्ञान प्राप्ति स्थल - निरंजना नदी के तट पर बोधगया में। उसके बाद (ज्ञानप्राप्ति) से पीपल वृक्ष (बोधि वृक्ष), गया का समीपवर्ती स्थान (बोध गया) और सिद्धार्थ (बुद्ध) कहलाये।

धर्म प्रचार-प्रसार का समय - 45 वर्षों तक लगातार।

प्रथम उपदेश एवं स्थान → सारनाथ (वाराणसी) में पंच वर्गीय भिक्षुओं को दिया। इनका प्रथम उपदेश ही 'धर्मचक्र-प्रवर्तन' के नाम से जाना जाता है।

पंचवर्गीय भिक्षुओं के नाम → कौण्डिन्य, वप्प, भद्दीय, अस्साजि, महानाम।

सारनाथ का प्राचीन नाम → इसिपत्तनमृगदाव

निर्वाण स्थान → 80 वर्ष में (ईसवी पूर्व 483), कुशीनगर (उत्तरप्रदेश)

संयास ग्रहण का कारण → (4) चार कारण — बुढ़ापा, रोगी, मृत्यु और संयासी। इन्हें देखकर उनके मन एवं हृदय में कठोर क्रन्दन हुआ और वे बहुत व्याकुल हो उठे। इसलिए उनके मन में विचार आया कि इनसे छुटकारा पाना आवश्यक है जिसके लिए वे गृहत्याग कर संयासी बन गये।

महापरिनिर्वाण → गौतम बुद्ध की मृत्यु को महापरिनिर्वाण के रूप में जानी जाती है।

ज्ञान प्राप्त हुआ - चार आर्य सत्यों का। चार आर्य सत्य हैं - या आर्य सत्य हैं -
(1). दुःख है — (व्यवहारिक निर्विवाद सत्य)।
(2). दुःख का कारण है - (द्वादश निदान)।
(3). दुःख निरोध — (निर्वाण)।
(4). दुःख निरोधमार्ग — (अष्टांगिक मार्ग)।

बौद्ध दर्शन है — नास्तिक दर्शन & अनिश्वरवादी दर्शन।
(प्रारम्भ में वस्तुवादी, कालांतर में प्रत्ययवादी)।

मध्यम मार्ग → दो अतियों के बीच का मार्ग ही मध्यम-मार्ग है —
(i) न अत्यधिक सुख।
(ii) न अत्यधिक दुःख एवं तपस्या।

आदर्श वाक्य - बहुजन हिताय बहुजन सुखाय।
ग्रंथ - पिटक (त्रिपिटक) - विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधर्म पिटक।
भाषा - पालि (लोक भाषा)
गौतम बुद्ध को बोधिसत्व के रूप में भी जाना जाता है।
आर्य - श्रेष्ठ, अटल, अकाट्य
निर्वाण एवं परिनिर्वाण - निर्वाण इसी जीवन में संभव (जीवन रहते हुए) है, और इसकी प्राप्ति के पश्चात् समस्त दुःखों से छुटकारा मिल जाता है। परिनिर्वाण मृत्यु के बाद की अवस्था है। (शरीर के नाश के पश्चात्)

नव बौद्धवाद → अम्बेडकर और उनके अनुयायियों ने बौद्ध धर्म को एक नये रूप में प्रस्तुत किया। अतः अम्बेडकर के द्वारा प्रस्तुत इस नये सिद्धांतों को 'नव-बौद्धवाद' कहा गया है।

संगीतियाँ - (4), (6) - राजगृह, वैशाली, पाटलीपुत्र, कुण्डलग्राम आदि।

सिद्धांत → आर्य सत्य, क्षणिकवाद, अनात्मवाद, द्वादश निदान, निर्वाण, प्रतित्यसमुत्पाद, अष्टांगिक मार्ग, त्रिशिक्षा, क्षणभंगवाद, अर्थक्रियाकारित्व, अनित्यवाद, कर्म, पुनर्जन्म आदि।

सम्प्रदाय - दो → हीनयान - (स्थिरवादी) → संकीर्ण मार्ग।
महायान - (महासांघिक) → उदार मार्ग।

हीनयानी - (छोटा मार्ग), रूढ़िवादी, निर्वाण की अवस्था को अर्हत कहते हैं, पालि भाषा का प्रयोग, प्रयत्न साध्य (बुद्ध), 6 पारमिताओं का ग्रहण एवं कट्टरवादी। दो सम्प्रदाय हैं -

(i) वैभाषिक → (बाह्य जगत एवं आंतरिक चित्त दोनों का अस्तित्व), प्रत्यक्ष।
(ii) सौत्रान्तिक → (बाह्य जगत एवं चित्त), अनुमान द्वारा जगत का ज्ञान।

इन्हें क्रमशः बाह्य प्रत्यक्षवादी (वैभाषिक), और बाह्य अनुमेयवादी (सौत्रांतिक) भी कहते हैं।

महायान → बड़ा मार्ग, उदार, प्रगतिशील, बोधिसत्व (निर्वाण), महामानव एवं अमिताभ बुद्ध, पालि एवं संस्कृत भाषा का प्रयोग, 10 पारमिताओं का ग्रहण। इसके भी दो सम्प्रदाय हैं -

(i) योगाचार → (विज्ञानवादी), बाह्य जगत की सत्ता नहीं है, केवल आन्तरिक चित्त ही सत्य है। → (असंग, वसुबंधु - प्रवर्तक)।
(ii) माध्यमिक → (शून्यवादी), न बाह्य और न आंतरिक किसी की भी सत्ता नहीं मानते। → (नागार्जुन - प्रवर्तक)।

प्रमाण स्वीकार्य - 2 - प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण।

पंचशील → सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य।

त्रिशिक्षा → शील, समाधि, प्रज्ञा।

त्रिसंघ → बौद्ध, धम्म, संघ।

भारत में बौद्ध धर्म के उत्थान के कारण :-

(1). तथागत (बुद्ध) का स्वयं का व्यक्तित्व ।
(2). स्थानीय एवं लोक भाषा (पाली) में उपदेश ।
(3). उपदेशों का सरल एवं सहज होना ।
(4). बौद्ध धर्म में प्रवेश में आसानी (ग्रहण करना) ।
(5). राजाओं का संरक्षण प्राप्त होना ।
(6). हिंदू धर्म के कर्मकाण्डीय प्रवृत्तियों का विस्तार ।
(7). व्यवहारिक एवं नैतिक दृष्टिकोण ।

भारत में बौद्ध धर्म के पतन के कारण :-

(1). बुद्ध की कल्पना नौवें (9) अवतार के रूप में करना ।
(2). बौद्ध मठों में भ्रष्टाचार ।
(3). राजाओं का संरक्षण समाप्त होना ।
(4). बौद्ध धर्म में कर्मकाण्ड का प्रवेश ।
(5). विदेशी आक्रमण ।
(6). हिंदू धर्म का पुनर्हार ।
(7). बौद्ध धर्म का अनेक भागों में बँट जाना ।

विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण :-

(1). राजाओं के संरक्षण में गया ।
(2). एक जगह पर कोई एक पंथ (सम्प्रदाय) ही गया ।
(3). संबंधित देश में किसी मजबूत धर्म का न होना ।
(4). संबंधित देश में प्रचलित अच्छी बातों का समावेश कर लेना ।

(Note → विदेशों में अशोक ने अपने पुत्र एवं पुत्री महेंद्र और संघमित्रा को भारत से बाहर भेजा था धर्म-प्रसार हेतु ।
(लंका, सीरिया, मिस्र, मैसिडोनिया, साइरीन, एपीरस आदि)

⇒ इसके अतिरिक्त कालांतर में बौद्ध धर्म स्याम, ब्रह्मदेश, चीन, कोरिया जापान, मंगोलिया, तिब्बत, भूटान, नेपाल, थाइलैण्ड आदि देशों में भी फैल गया और भारत से इसका विलोपन हो गया ।